रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १: नूर-ए-तौहीद (अखंडता की रौशनी)

गुरु नानक अखंडता के प्रतीक हैं जो बहुत लोगों के मार्गदर्शक हैं। १५वीं सदी में पैदा हुए गुरु नानक ने दो दशकों से भी ज़्यादा समय तक दूरवर्ती जगहों का स्वार्थरहित भ्रमण किया। उन्होंने विभिन्न संस्कृतियों और धार्मिक मान्यताओं के लोगों को एक साथ लाने के लिए दार्शनिक और सामाजिक गोष्ठी आयोजित की। उन्होंने सबदों और संगीत के माध्यम से अपना अनुभवजन्य ज्ञान साँझा किया। वहदत की पैरवी में, उन्होंने निडर होकर सामाजिक विभाजन को चुनौती दी तथा लिंग, धार्मिक, नस्लीय और वर्ग असमानता का तहेदिल से विरोध किया।

अमरदीप सिंह: मेरा नाम अमरदीप सिंह है। मैं प्राचीन ऐतिहासिक लेखों के अनुसार गुरु नानक की जीवनी की तलाश कर करूंगा।

महंत विष्णु दास उदासीन: गुरु नानक ने हमें दिव्यता का सार, एक एकीकृत शक्ति, सिखाया।

डॉ. दलजीत सेठी: उन्होंने पूरी मानवता को वहदत का संदेश दिया जो क्षेत्रों, जातियों और धर्मों के विभाजन से पार है।

अनिल धीर: 530 साल पहले उन्होंने अज्ञात स्थानों की यात्रा की थी। लेकिन इसके बावजूद उनका गहरा प्रभाव पड़ा। यह प्रभाव न केवल स्थायी था बल्कि बढ़ता भी गया।

नूर-ए-तौहीद अखंडता की रौशनी जगाने वाले कोमल जुझारू की मासूम उम्र।

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

(मूलमंत्र, गुरु नानक)

कर्ता हाज़रा-हज़ूर है। वह सच है। सृजन के हर कण में नाज़िर है। बेख़ौफ़ है। अपने-पराये की भावना से ऊपर है। युगों-युग अटल है। जन्म-मरण के चक्र से अगम है। वह आप रोशन है। रहबर की रहमत से नाज़िल होता है

'रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप', २४ एपिसोड की गुरु नानक डॉक्युमेंट्री
TheGuruNanak.com पर ५ भाषाओं में उपलब्ध है।
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com

(मूलमंत्र, गुरु नानक)

रूपक वह कुंजी है जो वृतांत के गहरे अर्थों के भेद खोलती है।

आदिकाल से ही लोग अपने मंसूबों के तहत नई जगहों की यात्रा कर रहे हैं। सिकंदर ने पराये देशों को जीता। मार्क पोलो ने सौदागरी की संभावनाओं को तलाशा।

गुरु नानक एक अद्भुत शख्सियत थे। वह एक ऐसे रूहानी यात्री थे, जिन्होंने अपनी यात्राओं के दौरान विशाल क्षेत्रों का सफ़र किया और वहदत के रूहानी शब्दों का उच्चारण किया।

गुरु नानक ने अपने जीवन के बारे में कुछ नहीं लिखा लेकिन अपनी विरासत के रूप में दिव्य बाणी का अनंत भंडार छोड़ दिया जो जिज्ञासुओं को जीवन के हर चरण में प्रेरित करता है।

जब लग दुनीआ रहीऐ नानक किछ सुणीऐ किछ कहीऐ ॥
(राग धनासरी, गुरु नानक)

नानक ने फ़रमाया कि जब तक इस जगत पसारे में इंसानी अस्तित्व है, ज्ञान हासिल करना और बांटना मानवीय उद्देश्य है।
(राग धनासरी, गुरु नानक)

अमरदीप सिंह: जन्मसाखी शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। जन्म का अर्थ है जीवन और साखी का अर्थ है कहानी। गुरु नानक के जीवन सफ़र के साथ जुड़े वृतांत विश्वासी जनों की मुंहजबानी चले आये और एक समय काग़ज़ पर दर्ज होने लगे। यह जन्मसाखी साहित्य, गुरु नानक के फ़लसफ़े को संरक्षित करने और ज़्यादा लोगों में बाँटने के इरादे से कलमबंद किया गया।

गुरु नानक के ज्योति जोत समा जाने के पैंसठ साल बाद, भाई गुरदास ने उनके जीवन के बारे में पहली बार लिखा। इसके बाद अनेक जन्मसाखियाँ आई, जिनमें प्रमुख नाम हैं सीहाँ उप्पल, हाफीजाबाद, मिहरबान, भाई मनी सिंह, वलायत वाली, कोलब्रुक वाली और बी४०। इन लिखतों में कुछ समानताएं हैं और अंतर् भी, लेकिन यही गुरु नानक के जीवन सफ़र के मूल ऐतिहासिक स्रोत हैं। समय बीतने के साथ, गुरु नानक की उदासियों के बारे में नई-नई जगहों के किस्से सामने आते गए, जिनका हवाला पुराने लेखन में नहीं मिलता।

इसके अलावा, उनके जीवन के विवरण में मिथकों और चमत्कारों की भरमार होती चली गई। नई जानकारियां उनके मूल फ़लसफ़े पर भारी पड़ने लगी। हालिया दौर में डॉ. कृपाल सिंह ने 'जन्मसाखी परंपरा' शीर्षक के तहत पहली जन्मसखियों की समीक्षा की है और गुरु नानक के जीवन से संबंधित घटनाओं का चित्रण किया है।

उनकी समीक्षा के अनुसार, गुरु नानक की उदासियों का घेरा नौ इलाकों में फैला हुआ है - पाकिस्तान, इंडिया, तिब्बत, बांग्लादेश, श्रीलंका, सऊदी अरब, इराक, ईरान और अफ़ग़ानिस्तान।

हम इस रूपक का रहस्य समझने के लिए इन इलाकों का सफ़र कर रहे हैं।

गुरु नानक के जीवन और उनके मक़सद को जानने के इरादे के साथ, हमने पाकिस्तान में उनके जन्म स्थान से अपना सफ़र शुरू किया।

लाहौर से पश्चिम की तरफ लगभग अस्सी किलोमीटर दूर 'राय भोए दी तलवंडी है, जो अब ननकाना साहिब कहलाता है।

अमरदीप सिंह: अब हम ननकाना साहिब पहुंच गए हैं। ननकाना दो लफ़्ज़ों के जमा-जोड़ से बना है - नानक और आना। मतलब नानक का आगमन।

इस गांव की नींव एक मुसलमान जागीरदार राय भोए ने रखी थी। अब यह कृषि संपन्न क्षेत्र है लेकिन पंद्रहवीं शताब्दी में यहां घना जंगल था, रियासत के प्रभाव से बाहर अकेला बसा हुआ उस समय की राजनीतिक और धार्मिक उथल-पुथल से अप्रभावित गांव था।

गुरु नानक के समय, राय बुलार इस इलाके के मुखिया थे। हम उनके वंश के मौजूदा वारिसों से मिलने जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: सलाम भट्टी साहब

सलीम भट्टी: सत् श्री अकाल

अमरदीप सिंह: राय सलीम भट्टी साहब, आप गुरु नानक के साथ अपने पूर्वजों के संबंध के बारे में बतायें?

सलीम भट्टी: मैं राय बुलार के वंश में से 19सवीं पीढ़ी हूं जिन्होंने बाबा गुरु नानक देव जी महाराज का रूहानी रूप पहचाना। बाबा गुरु नानक देव जी महाराज के जन्म के समय राय बुलार भट्टी इस इलाके के जागीरदार थे।

राय सलीम भट्टी हमें ननकाना के पास एक छोटे से गाँव ले गए जहाँ बीते दौर की गवाहियां मिलती हैं।

सलीम भट्टी: ननकाना साहिब का पुराना नाम 'राय भोए दी तलवंडी' है। अब इस इलाके के गांवों के अलग-अलग नाम हैं। जिस जगह पर हम खड़े हैं, इसका नाम अब भी तलवंडी है।

अमरदीप सिंह: इस छोटी सी जगह का नाम अभी भी तलवंडी है?

सलीम भट्टी: हम अपने बचपन में जब यहां खेलने आते थे यहाँ टिब्बे थे। अब आबादी ज़्यादा है। यहां जब बारिश होती थी तो पुराने ज़माने के सिक्के निकलते थे।

तलवंडी में पंद्रह अप्रैल चौदह सौ उनहत्तर को गुरु नानक का जन्म माता तृप्ता की कोख से मेहता कालू के घर हुआ था, जिनका असल नाम कल्याण दास बेदी था। पिता राजस्व महकमें के मुलाज़िम थे।

फिर उठी आख़िर सदा तौहीद की पंजाब से ॥
हिंद को इक मर्द-ए-कामिल ने जगाया ख़्वाब से ॥
(अलामा इक़बाल)

फिर उठी अखंडता की पुकार पंजाब से
हिन्द को एक मर्द-कामल ने जगाया ख़्वाब से।
(अलामा इक़बाल)

ननकाना साहिब में कई गुरुद्वारे है लेकिन सबसे अहम गुरुद्वारा जन्म स्थान है जो पहले कालू का कोठा कहलाता था।

सतिगुरु नानक प्रगटिआ मिटी धुँध जग चानण होआ ॥
(भाई गुरदास)

गुरु नानक के विवेक के प्रगट होने से धुंध छंट गई है और चेतना की रौशनी हो गई है।
(भाई गुरदास)

अमरदीप सिंह: यह गुरुद्वारा गुरु नानक का जन्म स्थान है

उन्नीस सौ सत्तालिस के बंटवारे ने इस क्षेत्र को दो देशों, इंडिया और पाकिस्तान में विभाजित कर दिया। धर्म के आधार पर हुए बंटवारे के कारण ननकाना में गुरु नानक को मानने वाली संगत की कमी हो गई।

उन्नीस सौ सत्तर के दशक में पाकिस्तान के उत्तरी-पशिचमी भाग से सिख संगत ननकाना में बसने लगी। शहर में अब पश्तून पृष्ठभूमि की एक बड़ी सिख आबादी है।

अमरदीप सिंह: जन्मसाखियों में दर्ज है कि पंडित हरदयाल ने भविष्यवाणी की थी कि गुरु नानक हिंदुओं और मुसलमानों के रहबर होंगे। समय के साथ, वह पूरी मानवता के रहबर बन गए। इसलिए कहा जाता है,

नानक शाह फ़कीर, हिंदुओं के गुरु, मुसलमानों के पीर ॥

गुरु नानक दो बहन भाई में से छोटे थे। उनकी बड़ी बहन बेबे नानकी थी।

पंद्रहवीं शताब्दी अशांति का दौर था। समाज में जाति विभाजन, कर्मकांड, ज़ुल्म और रुतबे का प्रभाव था। धर्म के ध्वजवाहक कर्मकांड और कट्टरता के नाम पर मज़लूम जनता पर अत्याचार कर रहे थे। गुरु नानक के जन्म से पहले, सिंधु क्षेत्र में सियासी बदअमनी फैली हुई थी। मध्य एशिया के हमलावर लगातार हमला कर रहे थे। उन परिस्थितियों में, सिंधु नदी क्षेत्र के निवासी शक्तिहीन थे। न ख़्यालों की आज़ादी और न ही मान्यताओं की।

ऐसे हालात में, गुरु नानक ने अपनी इंकलाबी लौ से आवाम को रोशन किया और समाज के पैरों में पड़ी बेड़ियों को तोड़ा।

गुरुद्वारा जन्म अस्थान के नजदीक कई और गुरुद्वारे हैं जिनका इतिहास गुरु नानक के बचपन से जुड़ता है।

हम गुरुद्वारा बाल लीला जा रहे हैं जहां गुरु नानक अपने साथियों के साथ खेलते थे।

अमरदीप सिंह: जन्मसखियों में लिखा है कि बचपन में गुरु नानक शांतचित और रूहानी स्वभाव के मालिक थे। जिस उम्र में बच्चे सांसारिक खेल खेलते है, गुरु नानक रूहानी संवाद में लगे हुए थे। उदाहरण के लिए उन्होंने राग सूही में कहा है,

आत्म राम संसारा ‖
साचा खेल तुम्हारा ‖
(गुरु नानक)

सृजनहार का वास संसार में है।
इसी का खेल सच की तरह ज़ाहिर होती है। (गुरु नानक)

इस गहरे अर्थ वाले सबद में उन्होंने सांसारिक खेल का रहस्य उजागर किया है। सच और सृजनहार की कृत। दुनियादारी की ज़िम्मेदारियों को निभाते हुए मनुष्य को नफ़्स और भौतिक चीज़ों की दौड़ में गुम नहीं हो जाना चाहिए। गुरु नानक कहते हैं कि जीवन का लक्ष्य ऐसा ज्ञान प्राप्त करना है जो मनुष्य को नेकी की राह पर ले जाए।

जब गुरु नानक सात साल के थे तब मेहता कालू ने फ़ैसला किया कि वह रस्मी तौर पर शिक्षा हासिल करें। अब हम गुरुद्वारा पट्टी साहिब जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: यह गुरुद्वारा उस अस्थान पर बना हुआ है जहां गुरु नानक ने शुरुआती शिक्षा हासिल की थी।

गुरु नानक के पिता ने उन्हें पढ़ने के लिए पंडित बृजनाथ के पास भेजा। उनके मार्गदर्शन में बाल नानक ने भारतीय फ़लसफ़े, संस्कृत भाषा और लंडा लिपि में शिक्षा प्राप्त की।

बाद में मेहता कालू ने मौलवी कुतबदीन से गुरु नानक को फ़ारसी सिखाने का अनुरोध किया जो कि राजभाषा थी। मौलवी साहब ने उन्हें हिजाज़ी भी सिखाई जिसे अरबी कहते हैं और इसमें कुरान सहित इस्लामी साहित्य का निर्माण किया गया है। कम उम्र से ही गुरु नानक अपने क्षेत्र के दोनों धर्मों, हिंदू और इस्लाम की बुनियादी धारणाओं से परिचित हो गए।

अमरदीप सिंह: इस स्थान पर खड़े होकर, मुझे गुरु नानक के राग आसा में 'पट्टी लिखी' सबद का एहसास हो रहा है जिसमें उन्होंने हर अक्षर को रूहानियत से जोड़ा है। वह लंडे के अक्षर 'सस्से' के बारे में लिखते हैं:

ससै सोइ सृसटि जिन साजी सभना साहिब एक भइआ ॥
सेवत रहे चित जिन्न का लागा आइआ तिन्न का सफल भइआ ॥१॥
मन काहे भूले मूड़ मना ॥
जब लेखा देवहि बीरा तउ पड़िआ ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

सस्से के हवाले से कर्ता ने साजना की जो सभी जीवों का सृजनहार है।
इस चेतना के साथ जो जुड़े है उन एक सुर मनुष्य की होंद सफल है।
हे अज्ञानी मन! तू कहाँ खोया है?
भाई! जब तेरे अमलों का हिसाब होगा तब तेरे विवेक का इम्तिहान होगा।
(राग आसा, गुरु नानक)

उस्ताद के लिए "सस्सा" महज एक धुन थी लेकिन गुरु नानक ने इस हवाले से उस को धन्य किया और बताया कि पूरी क़ायनात का सृजनहार एक है। उन्होंने अक्षरों की सादगी से वहदत की व्याख्या की। उस सर्वशक्तिमान के अंश के रूप में हम सब बराबर हैं। भेदभाव अहंकार से पैदा होता है। जो इस सत्य को जानता है वही सच्चा ज्ञानी है।

गुरु नानक ने कर्मकांड से जुड़ी प्रथाओं को सवालों के घेरे में खड़ा किया। उन्होंने बचपन से ही बुनियादी मानवीय गुणों के बिगड़ने के कारण बनने वाली सामाजिक और धार्मिक परंपराओं पर सवाल किये।

जब उम्र हुई तो गुरु नानक के माता-पिता ने जनेऊ संस्कार का फैसला किया। इस धार्मिक प्रथा के तहत ऊंची जाति के लड़कों को जनेऊ धारण करवाया जाता था।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक बहुत ही जिज्ञासु बालक थे। उन्होंने अपनी बहन बेबे नानकी से पूछा कि उन्होंने जनेऊ पहना है या नहीं? जवाब मिला कि जनेऊ केवल उच्च जाति के पुरुष ही पहनते हैं। हैरान-परेशान गुरु नानक ने जाकर पंडित से पूछा, "जनेऊ का मकसद क्या है?" जब कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला तो गुरु नानक ने स्वयं विचार किया। जब समाज में जाति और लिंग के आधार पर भेदभाव उजागर हुआ तो उन्होंने यह शबद गाया:

दइआ कपाह संतोख सूत जत गंढी सत वट ॥
एह जनेऊ जीअ का हई त पाडे घत ॥
ना एह तुटै ना मल लगै ना एह जलै न जाइ ॥
धंन सु माणस नानका जो गल चले पाइ ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

दया की कपास सब्र के धागे इंद्रियों पर काबू की गांठ और सत्य का वट्ट दें।
अगर आप जी के पास ऐसा पवित्र सूत है, ऒ पंडित! तब मेरे को जनेऊ पहना दीजिये।
यह धागा जो न टूटे, न मैला हो, न आग में जले और न ही गुम हो।
नानक ने फ़रमाया कि वह जीव धन्य हैं, जिनके गले में ऐसा धागा है।
(राग आसा, गुरु नानक)

गुरु नानक ने पांडे से एक ऐसा जनेऊ मांगा जो हमेशा शुद्ध रहे, कपास के बज़ाय दया से बना हो, बुनाई का धागा सब्र से बुना हो, इंद्रियों पर काबू की गांठ बाँधी हो और सत्य का बट चढ़ा हो। उन्होंने दिखावे के बज़ाय मानवीय गुणों के महत्व पर जोर दिया।

तग न इंद्री तग न नारी ॥
भलके थुक पवै नित दाड़ी ॥
तग न पैरी तग न हथी ॥
तग न जिहवा तग न अखी ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

नफ्स को बांधने वाला कोई धागा नहीं है। महिलाओं के लिए धागा नहीं है।

बुरे कर्मों का एहसास होने पर पछतावा होता है।
कोई धागा पैरों को रोक नहीं सकता। कोई धागा हाथों की हरकत रोक नहीं सकता।
कोई धागा ज़ुबान नहीं पकड़ सकता। कोई भी धागा आँखों के कर्म नहीं छीन सकता।
(राग आसा, गुरु नानक)

कोई भी धागा मानव आत्मा और वासना को नहीं बांध सकता। उन्होंने दृढ़ता से सवाल किया कि सिर्फ धार्मिक वस्त्र पहनकर कोई महात्मा कैसे बन सकता है। उन्होंने धर्म और लिंग के आधार पर बनाये गये सामाजिक और धार्मिक रीति-रिवाज़ों का खंडन किया जो मनुष्य के कार्यों, गुणों और क्षमताओं को नज़रअंदाज़ करते हैं और साथ ही यह मनुष्य के अपने ही साथियों की गरिमा को कम करते हैं।

बचपन से ही गुरु नानक सांसारिक गतिविधियों के बज़ाय रूहानी प्राणियों की संगति को पसंद करते थे। सांसारिक मामलों में उनके अलगाव के कारण, उनके पिता ने उन्हें भैंसों को चराने की जिम्मेदारी सौंपी। यह उनके दैनिक जीवन का हिस्सा बन गया।

राय सलीम भट्टी ने अपने पूर्वज राय बुलार भट्टी की कृषि भूमि दिखाई। कहा जाता है कि गुरु नानक इस इलाके में भैंसों को चराते थे।

सलीम भट्टी: यह जगह किआरा साहिब है। यहां बाबा गुरु नानक देव जी महाराज भैंसों को चराया करते थे।

एक दिन गुरु नानक अपनी सोच में मशगूल थे तभी उनके पशु फ़सलों में घुस गए। गुरु नानक के पशुयों को देखकर किसान ने अनुमान लगाया कि खेत में नुकसान हो गया होगा। गुस्साए किसान ने युवा नानक की लापरवाही की शिकायत की। कर्मचारियों ने जांच की तो फ़सलों को कोई नुकसान नहीं हुआ था। भावनाएं व्यक्ति के काम पर हावी हो जाती हैं। गुस्साए और लालची किसान ने मनगढ़ंत आरोप लगाए थे। गुरु नानक ने किसान की दुविधा और पछतावे पर सहानुभूतिपूर्वक प्रतिक्रिया दी और उसे एक सदाचारी जीवन जीने का मुहावरेदार उदाहरण दिया।

धृग तिना का जीविआ जि लिख लिख वेचहि नाउ ॥
खेती जिन की उजड़ै खलवाड़े किआ थाउ ॥
सचै सरमै बाहरे अगै लहहि न दाद ॥
अकल एह न आखीऐ अकल गवाईऐ बाद ॥

(राग सारंग, गुरु नानक)

जो इलाही नाम के नीचे सौदागरी करते हैं, वे अभागे हैं।
जिनकी फ़सलें बर्बाद हो जाती है, वे क्या काट सकते हैं?
सच और विनम्रता के बिना मनुष्य सत्कार का पात्र नहीं हो सकता।
क्लेश के साथ जुड़ा हुआ ज्ञान समझदारी नहीं होता। ऐसा ज्ञान क्लेश में व्यर्थ जाता है।
(राग सारंग, गुरु नानक)

जैसे बर्बाद फ़सलों से अच्छी पैदावार नहीं हो सकती, वैसे ही क्लेश, द्वेष और गुस्से पर सवार मनुष्य आनंदमई ज़िंदगी नहीं जी सकता।

राय सलीम भट्टी हमें इसके बाद गुरुद्वारा मल्ल जी साहिब ले गए।

सलीम भट्टी: एक बार राय बुलार जी पास से गुज़र रहे थे, उन्होंने देखा कि बाबा गुरु नानक देव जी, जो उस समय बहुत छोटे थे, इस पेड़ के नीचे सो रहे थे और सांप ने अपना फन फैला कर और उन पर छाया की हुई थी। राय बुलार जी ने महसूस किया कि यह बच्चा कोई साधारण बच्चा नहीं है, उनमें रूहानियत है। राय बुलार साहिब ने अपना आधा रकबा, जो कि 750 मरब्बा है, उनके नाम कर दिया। आज पूरा ननकाना उस ज़मीन पर बसा हुआ है।

मैं कभी-कभी ऐतिहासिक 'जन्मसखियों' में दर्ज कुछ घटनाओं पर विचार करता हूं जिनमें एक पेड़ की छाया के स्थिर रहने और सोते हुए बाल नानक पर सांप की छाया के बारे में कथन आते हैं।

तूँ सभना माहि समाइआ ॥
तिन करतै आप लुकाइआ ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

कर्ता सभी में समाया है।
और उसने अपने आप को छुपाया है।
(सिरी राग, गुरु नानक)

मानव भाषा के दायरे में आने से इंकार करने वाली घटनाओं के व्याख्यान की स्वीकृति या अस्वीकृति चुनौतीपूर्ण है। लंबे समय तक भक्ति के दायरे में बिताने के बाद, इन अदभुत चमत्कारओं की जड़ें गहरी होती जाती हैं और वह दर्शनिक संदेशो पर हावी हो जाती हैं।

गुरु नानक ने अपनी बाणी में इस सच्चाई का खुलासा किया कि सृजनहार अपनी रचना में मौजूद है जो कायनाती विवस्था है। मेरी विनम्र समझ के अनुसार, सृजनहार के रचित चमत्कार हो रहे हैं जो समझ से परे हैं। इसलिए मैंने चमत्कारी घटनाओं के बजाय गुरु नानक के हाज़रा-हज़ूर वाले फ़लसफ़े को अपना दायरा बनाया है।

गुरु नानक की दुनियादारी के कामों में अरुचि से चिंतित माता पिता ने सोचा कि शायद शादी करने के बाद उनका व्यवहार बदल जायेगा। सोलह साल की उम्र में एक योग्य लड़की की तलाश शुरू हुई। इस कम उम्र में उनकी मंगनी मूला खत्री और चंदो रानी की बेटी घुम्मी से की गई।

दोनों माता-पिता की उपस्थिति में शादी की रस्में बटाला में हुई, जो अब इंडिया के गुरदासपुर ज़िले में है।

मौजूदा दौर में राजनीतिक कारणों से इंडिया-पाकिस्तान सीमा को कुछ निश्चित चौकियों से ही पार किया जा सकता है। इसलिए हम पाकिस्तान से इंडिया जा रहे हैं और आगे वाघा सरहद से बटाला जा रहे हैं।

बटाला के अंदरूनी शहर में हम गुरुद्वारा डेरा साहब पहुंचे हैं, इस जगह पर गुरु नानक की शादी घुम्मी से हुई थी जिन्हें प्यार से सुलखनी बुलाते थे। माना जाता है कि इस जगह पर मूला खत्री का घर था।

कुछ दूरी पर गुरुद्वारा कन्ध साहिब है। इस जगह पर बारात को ठहराया गया था। ऐसा माना जाता है कि यह दीवार शायद उसी इमारत का अवशेष है जिसमें बारात को ठहराया गया था।

विवाह के बाद माता सुलखनी की डोली लेकर गुरु नानक 'राय भोये दी तलवंडी' आ गए जिसका मौजूदा नाम ननकाना साहिब है।

मैडा मन रता आपनड़े पिर नाल ॥
हउ घोल घुमाई खंनीऐ कीती हिक भोरी नदर निहाल ॥
(राग मारू काफी, गुरु नानक)

मेरी रूह पाक मुहब्बत के गहरे रंग में रंगी है।
इस मेल के लिए मैंने द्वैत के चक्र को चाक कर दिया। मुझे विस्मय के क्षण से कृतार्थ करें[
(राग मारू काफी, गुरु नानक)

दो लोगों का विवाह उनके संयुक्त विकास से जुड़ा है। रूहानियत से भरपूर रिश्ता उस समय जुड़ता है जब अहंकार और द्वैत से छुटकारा मिलता है।

एक बार फिर हम इंडिया-पाकिस्तान की सीमा के वाघा सरहद से होते हुए फारूकाबाद जा रहे हैं जो ननकाना साहब से लगभग चौबीस किलोमोटर की दूरी पर है।

अमरदीप सिंह: गुरु नानक के समय इस जगह का नाम चुहड़काना था। इस जगह पर गुरु नानक ने लंगर की प्रथा शुरू की। अट्ठारह वर्ष की उम्र तक भी गुरु नानक ने दुनियादारी के कामों में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। उनकी ज़िंदगी के बारे में चिंता कर रहे मेहता कालू ने उनको कोई काम शुरू करने लिए ज़रूरी रकम दी।

गुरु नानक अपने सहायक के साथ चुहड़काना पहुंचे ही थे कि उनकी मुलाकात भगत रेन से हुई जो कि अपने अनुयायियों के एक समूह के साथ थे। उन्हें भूख लगी थी। दयालु गुरु नानक में बांटने और सेवा की भावना थी, उन्होंने अपना सारा पैसा संतों की सेवा में खर्च कर दिया। सेवा के इस निस्वार्थ कार्य से उन्होंने एक अनूठी मिसाल कायम की। भोजन जीवन को बनाए रखने का मुख्य स्रोत है। जब यह कार्य संयुक्त रूप से किया जाता है, तो यह दयालुता और रूहानियत की भावना को बढ़ाता है।

रव सस दीप अनूप जोत तृभवण जोत अपार ॥
हाट पटण गड़ कोठड़ी सच सउदा वापार ॥
गिआन अंजन भै भंजना देख निरंजन भाइ ॥
गुपत प्रगट सभ जाणीऐ जे मन राखै ठाइ ॥
(श्री राग, गुरु नानक)

सूरज और चाँद, दो अनूठे दीपक हैं। इनकी अनंत रौशनी समूची क़ायनात को रोशन करती है।
मानव मूर्त एक शहर किला और भंडार है। यह इलाही गुणों की सौदागरी करने वाली दुकान है।

विवेक दुनियावी ख़ौफ़ को चाक करता है और पाक़ मुहब्बत के अहसास के साथ नीयत निर्मल होती है।
गहरे रहस्य सामने आते हैं अगर मन का संतुलन बना रहे।
(श्री राग, गुरु नानक)

गुरु नानक ने फ़रमाया कि जब अज्ञानता का अंधेरा छटता है तब सदगुण ज़ाहिर होते हैं। मनुष्य शरीर तो रूह का बन्दगीख़ाना है। अगर मनुष्य शरीर रूपी दुकान को ख़ुराक के तौर पर चेतना रूपी ज्ञान की रौशनी मिलती रहे तो इससे व्यापार सच्चा हो जाता है। इस दशा में चैन के भंडार भर जाते हैं

अमरदीप सिंह: उन्होंने यही सच्चा सौदा किया।

माता सतनाम कौर: गुरु नानक ने जो लंगर शुरू किया, वो सभी के लिए था। वो एक सुंदर परंपरा चला गए। अब हम उम्मीद करते हैं, हम उस दिन के लिए तरसते रहते हैं कि संगत यहां आये और लंगर ग्रहण करें। लंगर में रौनक लगी रहे।

भूखे साधुओं की सेवा में सारी धनराशि खर्च करके गुरु नानक तलवंडी वापस पहुंचे। अपने किये पर पिता कालू की नाराज़गी का अंदाज़ा लगा कर के वह वृक्षों के झुंड के नीचे शहर से बाहर ही रुक गए। उस जगह पर अब गुरुद्वारा तंबू साहब है।

सहायक ने मेहता कालू के सामने चुहड़काना में हुई विस्तृत घटना को बताया। गुस्से से लाल हुए मेहता कालू ने गुरु नानक से सवाल किया कि उन्होंने कोई फ़ायदे वाला काम करने की बज़ाय भूखे साधुओं की सेवा में धन को बर्बाद क्यों किया? गुरु नानक ने शांति से जवाब दिया कि भूखे साधुओं की सेवा से ज़्यादा गुणकारी और लाभकारी सौदा उन्हें नहीं मिला।

सलीम भट्टी: राय बुलार जी, जो यहां के हाकम थे, जब उन्हें पता लगा कि मेहता कालू अपने बेटे, बाबा गुरु नानक के ऊपर बहुत गुस्सा हैं तो उन्होंने अपनी जेब में से 20 रुपये मेहता कालू को दिए।

जन्मसाखियों में दर्ज है कि राय बुलार का गुरु नानक के साथ बहुत प्यार था और वह उनका बहुत सत्कार करते थे। वह बहुत भले और धर्मात्मा व्यक्ति थे जिनके ऊपर गुरु नानक के व्यक्तित्व का गहरा असर था।

बचपन में ही गुरु नानक की उन सभी धार्मिक पूजा स्थलों की यात्रा करने की इच्छा उतपन्न हुई जो तीर्थयात्रा के लिए जाने जाते थे। उन्होंने अपने दिल की बात भाई मरदाना के साथ साझा की, जिनके साथ उनका दिल और विचारों का गहरा संबंध था।

अमरदीप सिंह: भाई मरदाना लंबे समय तक बाबा गुरु नानक के साथ रहे। उन्होंने बाबा गुरु नानक के मानवीय संदेश को दुनिया में फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भाई मरदाना का जन्म इसी गांव में हुआ था जो अब ननकाना साहिब है। उनका जन्म एक मरासी परिवार में हुआ था। गुरु नानक ने बीस वर्ष की आयु में भाई मरदाना से उनकी रूहानी यात्रा पर उनके साथ चलने का अनुरोध किया।

मेहता कालू ने यात्रा पर जाने की इजाज़त नहीं दी। भाई मरदाना ने इस सोच को कुछ समय के लिए निरस्त करने की सलाह दी क्योंकि उनकी बेटी की शादी की ज़िम्मेदारी थी। यात्रा करने की इच्छा से पता चलता है कि गुरु नानक का झुकाव कम उम्र से ही विभिन्न धर्मों के मुकदस सथानों का अनुभव करना और ज़ियारतियों के साथ चर्चा करने का था।

गुरु नानक की दार्शनिक सोच और पदार्थ से विरक्ति होने के कारण उनके माता-पिता को यह यकीन होने लगा कि उन्हें कोई बीमारी है। रिश्तेदारों और दोस्तों के लिए उनकी उदासीनता चिंता का विषय थी। मेहता कालू ने वैद को बुलाया। जब वैद ने उनकी नब्ज़ को टटोला तो उन्होंने अपना हाथ छुड़ा लिया और यह सबद गाया,

वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंढोले बाँह ॥
भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥
(राग मलार, गुरु नानक)

इलाज के लिए वैद बुलाया है। उसने नब्ज़ को टटोला है।
वो भोला नहीं जानता कि दर्द कलेजे में गहरा उतरा है।
(राग मलार, गुरु नानक)

गुरु नानक की बीमारी शारीरिक नहीं थी। उनकी आत्मा में अलगाव का गहरा दर्द था। समाज में फैले अहंकार की बीमारी से उनके कलेजे में दर्द पैदा होता था क्योंकि इससे सामाजिक ताने-बाने के बुनियादी मूल्यों का नाश होता है और नज़दीकियों में कलह पैदा होती है।

हम राय बुलार भट्टी की यादगार पर सम्मान देने जा रहे हैं जो ननकाना साहिब में गुरुद्वारा जन्म स्थान से कुछ दूरी पर ही एक टीले पर बनी हुई है।

सलीम भट्टी: दुनिया आज जहां छोटे-छोटे मसलों में उलझी हुई है, हम, राय बुलार की औलाद, हमेशा यह कोशिश करते हैं कि जिस तरह राय बुलार साहब और बाबा गुरु नानक जी दुनिया और धर्मों को इकट्ठा करके चले, हम भी चाहते हैं कि यह साथ-साथ चले।

गुरु नानक के मुताबिक सच्ची दोस्ती का मतलब एक हो कर प्रेम से रूहानी ज्ञान प्राप्ति का आकर्षिक सफ़र तय करना है।

गुण गाइ मंगल प्रेम रहसी मुँध मन ओमाहओ ॥
साजन रहंसे दुसट विआपे साच जप सच लाहओ ॥
(राग गौड़ी पूरबी, गुरु नानक)

ख़ुशी में प्रेम के गीत गाने से रूह प्रसन्न और बुलंद रहती है।
सज्जन खुश होते हैं और दुष्ट निराश होते हैं। सच की सोच-विचार करने से हक़ीकत की तह पता चलती है।
(राग गौड़ी पूरबी, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड १: नूर-ए-तौहीद (अखंडता की रौशनी)

ये चर्चा संकेतक गुरु नानक के दार्शनिक योगदान के ऐतिहासिक संदर्भ और प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं, जो एपिसोड में मौजूद विषयों पर आधारित है। उनके जीवन के अनुभवों और उनके अनुभवात्मक अंतर्दृष्टि के बीच अंतर्संबंध की जांच करके, हम इस बात की गहरी समझ प्राप्त करते हैं कि उनकी आध्यात्मिक यात्रा ने एकता के उनके संदेश को कैसे आकार दिया। ये प्रश्न इस बात पर गंभीर सोच को प्रेरित करते हैं कि कैसे गुरु नानक के कालातीत ज्ञान ने 15वीं शताब्दी के भारत में जाति, लिंग और धार्मिक हठधर्मिता पर आधारित सामाजिक मानदंडों और विभाजनों को चुनौती दी, और वर्तमान में भी प्रेरणा देता है।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. **गुरु नानक के समय की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियाँ क्या थीं, और उन्होंने उनकी आध्यात्मिक खोज को कैसे प्रभावित किया?**
एपिसोड में १५वीं शताब्दी को एक अशांत अवधि के रूप में वर्णित किया गया है, जहाँ समाज जाति विभाजन, कर्मकांड, उत्पीड़न और पदानुक्रम के स्तंभों पर काम कर रहा था। इसमें कहा गया है कि धार्मिक नेतृत्व कर्मकांडी मानदंडों और रूढ़िवादी विचारों को लागू करके कमजोरों का सामाजिक रूप से उत्पीड़न कर रहा था। इसके अलावा, गुरु नानक के जन्म से पहले एक लंबे समय तक, सिंधु क्षेत्र मध्य एशियाई बादशाहों के नेतृत्व में लगातार आक्रमणों के कारण राजनीतिक अस्थिरता का अनुभव कर रहा था। इन परिस्थितियों में, भारतीय क्षेत्र के मूल निवासियों को उनके विशेषाधिकार, विचार और विश्वास की स्वतंत्रता से वंचित कर दिया गया था। इन परिस्थितियों ने समाज को जकड़ने वाली बेड़ियों को तोड़ने के लिए गुरु नानक की खोज को कैसे आकार दिया?

२. **गुरु नानक की प्रारंभिक शिक्षा उनके दार्शनिक दृष्टिकोण को आकार देने में कैसे महत्वपूर्ण थी?**
एपिसोड के अनुसार, गुरु नानक ने पंडित बृज नाथ के अधीन अध्ययन किया, जिन्होंने उन्हें भारतीय शास्त्र, संस्कृत भाषा और लंडा लिपि सिखाई, और बाद में मौलवी कुतुब-उद-दीन के अधीन अध्ययन किया, जिन्होंने उन्हें फ़ारसी, इस क्षेत्र की दरबारी भाषा सिखाई और उन्हें हिजाज़ी से परिचित कराया,

जिसे अरबी के रूप में जाना जाता है, यह वह भाषा है जिसमें कुरान और इस्लामी साहित्य लिपिबद्ध है। कम उम्र में ही, गुरु नानक दो प्रमुख देशी धर्मों - हिंदू धर्म और इस्लाम के धार्मिक ग्रंथों की प्रमुख जानकारियों से अच्छी तरह परिचित हो गए थे। विभिन्न धार्मिक परंपराओं के इस प्रारंभिक प्रदर्शन ने उनकी समावेशी दर्शन और विविध संस्कृतियों के साथ आध्यात्मिक संवाद में शामिल होने की क्षमता को कैसे प्रभावित किया?

३. **गुरु नानक की जीवन दास्तान और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि को संरक्षित करने में जनमसाखी परंपरा ने क्या भूमिका निभाई?**
एपिसोड में बताया गया है कि 'जनमसाखी' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है, 'जनम' का अर्थ है जीवन और 'साखी' का अर्थ है आख्यान। यह 'जनमसाखी' साहित्य अनिवार्य रूप से गुरु नानक के दर्शन को संरक्षित और प्रसारित करने के लिए तैयार किया गया था। इसमें आगे उल्लेख है कि गुरु नानक के जीवन वृत्तांतों को आस्थावान लोगों द्वारा मौखिक परंपराओं के माध्यम से आगे बढ़ाया गया और बाद में ग्रंथों के रूप में प्रलेखित किया गया। पहला जीवनी संबंधी विवरण गुरु नानक के जीवन के लगभग ६५ साल बाद भाई गुरदास द्वारा लिखा गया था, जिसके बाद विभिन्न जनमसाखियाँ विभिन्न नामों से जानी गईं। एपिसोड में यह भी उल्लेख किया गया है कि समय बीतने के साथ, नई दास्ताने गुरु नानक की यात्राओं को उन भूगोलों तक विस्तारित कर रही हैं जिनका उल्लेख सबसे पुरानी जनमसाखीओं में नहीं है। इसके अलावा, उनकी जीवन की दास्तानओं को चमत्कारों और मिथकों के साथ जोड़ा गया है, जिससे उनका मूल दर्शन दब गया है। इन विकसित होती कथाओं ने हमारे गुरु नानक के जीवन और दर्शन की समझ को कैसे संरक्षित किया है और संभावित रूप से कैसे रूपांतरित किया है?

४. **गुरु नानक की प्राथमिकताओं को स्थापित करने में 'सच्चा सौदा' की अवधारणा का क्या महत्व था?**
एपिसोड में वर्णन है कि जब गुरु नानक १८ वर्ष के थे, तो उनके पिता ने उन्हें २० रुपये दिए और उनसे कुछ व्यवसाय करने का अनुरोध किया। हालाँकि, भगत रेन नामक एक तपस्वी से मिलने पर, जिनके अनुयायी भूखे थे, गुरु नानक ने पूरी राशि का उपयोग तपस्वियों को खिलाने के लिए प्रावधान खरीदने में किया। एपिसोड में बताया गया है कि निस्वार्थ सेवा की इस क्रिया में, उन्होंने सभी की देखभाल की भावना का प्रदर्शन किया। अपने क्रोधित पिता द्वारा पूछे जाने पर, गुरु नानक ने शांति से उत्तर दिया कि उन्हें भूखों को खिलाने से अधिक पुण्य और लाभदायक सौदा नहीं मिला। इस दास्तान को 'सच्चा सौदा' के रूप में वर्णित किया गया है, जो उन्होंने किया, और इसे 'लंगर' (मुफ्त सामुदायिक रसोई) की परंपरा की शुरुआत करने का श्रेय दिया जाता है। यह प्रारंभिक घटना भौतिक धन बनाम सार्वभौमिक कल्याण के बारे में गुरु नानक की प्राथमिकताओं को कैसे स्थापित करती है?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. **मूल मंत्र में परिलक्षित गुरु नानक के दर्शन का सार क्या है?**
   एपिसोड में मूल मंत्र को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है: एक सर्वव्यापी। सत्य। सृष्टि में व्यक्त। निडर। भेदभाव से रहित। शाश्वत रूप। जन्म से परे। स्व-अस्तित्व। मार्गदर्शन की कृपा से प्राप्त। यह मूलभूत श्लोक गुरु नानक के दर्शन में एकता, सत्य, निडरता, गैर-भेदभाव और नित्यता सहित प्रमुख अवधारणाओं को स्थापित करता है। ये मौलिक सिद्धांत समानता और रुहानी जागरूकता के बारे में गुरु नानक के व्यापक दृष्टिकोण की नींव कैसे बनाते हैं?

२. **गुरु नानक ने अपने संदेशों के माध्यम से सामाजिक और धार्मिक भेदभाव को कैसे चुनौती दी?**
   एपिसोड में बताया गया है कि कैसे गुरु नानक ने निडरता से समाज की द्विआधारी संरचनाओं को चुनौती दी, और लिंग, धार्मिक, नस्लीय और वर्ग असमानताओं का लगातार विरोध किया। जनेऊ समारोह को उनकी चुनौती ने सवाल किया कि जाति व्यवस्था में पवित्र धागा केवल उच्च जाति के पुरुष सदस्यों के लिए क्यों है, जिससे लिंग और जाति दोनों के प्रति उनका विरोध प्रकट होता है। धार्मिक औपचारिकता के जवाब में, उन्होंने जोर देकर कहा कि इंद्रियों को रोकने के लिए कोई धागा नहीं है और वासना के लिए कोई धागा नहीं है और सवाल किया कि कोई केवल धार्मिक वस्त्र पहनकर कैसे पवित्र हो सकता है। सामाजिक और धार्मिक भेदभाव की ये आलोचनाएँ समानता और आध्यात्मिक प्रामाणिकता की गुरु नानक की व्यापक दृष्टि को कैसे दर्शाती हैं? गुरु नानक के सेवा के दर्शन में लंगर परंपरा का क्या महत्व है?

३. **गुरु नानक के सेवा के दर्शन में लंगर परंपरा का क्या महत्व है?**
   एपिसोड में सच्चा सौदा की घटना के माध्यम से गुरु नानक को 'लंगर' (मुफ्त सामुदायिक रसोई) की परंपरा के बीज बोने का श्रेय दिया गया है। इसमें बताया गया है कि जब गुरु नानक को भूखे तपस्वी मिले, तो एक दयालु व्यक्ति होने के नाते, दूसरों के साथ साझा करने और सेवा करने की भावना से भरे हुए, उन्होंने पूरी राशि का उपयोग तपस्वियों को खिलाने के लिए प्रावधान खरीदने में किया। एपिसोड में उल्लेख किया गया है कि भोजन जीवन को बनाए रखने का मूल स्रोत है। जब इसे साझा किया जाता है और सामूहिक रूप से ग्रहण किया जाता है, तो यह करुणा और एकता की भावनाओं को जागृत करता है। एपिसोड में एक सामुदायिक सदस्य का कहना है कि गुरु नानक द्वारा शुरू किया गया 'लंगर' (मुफ्त सामुदायिक रसोई) सभी के लिए था। यह एक सुंदर परंपरा थी जिसकी उन्होंने शुरुआत की। लंगर परंपरा समानता, सेवा और सांप्रदायिक सद्भाव के गुरु नानक के दर्शन को कैसे मूर्त रूप देती है?

४. **गुरु नानक की 'सच्चा सौदा' की अवधारणा उनके व्यापक रुहानी दृष्टिकोण से कैसे संबंधित है?**

एपिसोड में 'सच्चा सौदा' की दास्तान को उस सच्चे व्यवसाय के रूप में वर्णित किया गया है जो गुरु नानक ने वाणिज्य के लिए नियत धन का उपयोग भूखे तपस्वियों को खिलाने के लिए किया था। जब उनके पिता ने सवाल किया, तो गुरु नानक ने शांति से उत्तर दिया कि उन्हें भूखों को खिलाने से अधिक पुण्य और लाभदायक सौदा नहीं मिला। एपिसोड इस अवधारणा को गुरु नानक के सबद से जोड़ता है: मानव शरीर वह दुकान, शहर, किला और गोदाम है जहाँ सत्य के माल का कारोबार होता है। ज्ञान सांसारिक भय को दूर करता है। यह शुद्ध प्रेम प्राप्त करने के लिए स्पष्टता प्रदान करता है। यदि मन को संतुलित रखा जाए तो छिपे हुए रहस्य प्रकट होते हैं। 'सच्चा सौदा' की यह अवधारणा व्यापार और मूल्य की पारंपरिक धारणाओं को कैसे चुनौती देती है, और यह आध्यात्मिक अर्थशास्त्र के बारे में गुरु नानक के दृष्टिकोण के बारे में क्या बताती है?

५. **गुरु नानक ने सृष्टिकर्ता की प्रकृति और सृष्टि से उसके संबंध के बारे में क्या व्यक्त किया है?**

इस एपिसोड में निर्माता और सृष्टि के बीच संबंध के बारे में गुरु नानक के कई सबद शामिल हैं। राग सुही में वे कहते हैं: सर्वोच्च चेतना ब्रह्मांड में निवास करती है। उसकी अभिव्यक्ति की लीला ही सत्य है। श्री राग में, वह घोषणा करते हैं: आप, निर्माता सभी में समाहित हैं। सृजन करके तूने अपने आप को छिपा लिया है। वह 'स' अक्षर को उस एक चेतना से जोड़ते हैं जिसने सृष्टि का निर्माण किया। यह सभी का एकमात्र स्रोत है। यह प्रकरण बताता है कि एक सर्वोच्च शक्ति के हिस्से के रूप में, हम सभी समान हैं। भेदभाव अहंकार का परिणाम है. सृष्टि में रचयिता की सर्वव्यापकता की यह अवधारणा गुरु नानक के समानता के दर्शन और भेदभाव की उनकी आलोचना का आधार कैसे बनती है?

६. **गुरु नानक अपने दर्शन में अहंकार की अवधारणा को किस प्रकार संबोधित करते हैं?**

एपिसोड में वर्णन किया गया है कि कैसे गुरु नानक ने अपनी जाँच करने वाले चिकित्सक को बताया कि वे समाज में 'मैं', अहंकार की बीमारी के अनुभव से व्यथित थे, जो सामाजिक संरचना के मूल मूल्यों को विकृत कर रहा था, जिससे साथी प्राणियों के बीच संबंध टूट रहा था। 'पट्टी लिखी' सबद की व्याख्या करते हुए, एपिसोड में उल्लेख किया गया है कि भेदभाव अहंकार का परिणाम है। जो इस सत्य को समझता है वह सच्चा विद्वान है। विवाह पर चर्चा करते समय, एपिसोड में वर्णन किया गया है कि एक आनंदमय आध्यात्मिक संबंध तब प्राप्त होता है जब अहंकार का त्याग किया जाता है और द्वैत को दूर किया जाता है। गुरु नानक का अहंकार की आलोचना उनकी व्यापक सामाजिक संदेश को कैसे प्रेरित करता है जो मानव संबंधों को ऊपर उठाने और आध्यात्मिक विकास को समृद्ध करने के लिए उनकी दृष्टि को बढ़ावा देता है?

७. गुरु नानक की रुहानी मान्यता में सीखने और ज्ञान की क्या भूमिका है?

एपिसोड में राग धनासरी से गुरु नानक के सबद को उद्धृत किया गया है: जब तक हम इस दुनिया में मौजूद हैं, नानक कहते हैं, ज्ञान प्राप्त करने और प्रदान करने का प्रयास करें। इसमें बताया गया है कि कैसे गुरु नानक ने अनुभवात्मक ज्ञान का एक बड़ा भंडार छोड़ा, जो कई लोगों को अपने जीवन के हर चरण में शिक्षार्थी बने रहने के लिए प्रेरित करता है। अक्षरों पर एक पाठ के दौरान, उन्होंने इसे एकता के बारे में एक गहन आध्यात्मिक शिक्षा में बदल दिया। एपिसोड में यह भी उल्लेख किया गया है कि मानव शरीर, आत्मा के लिए एक मंदिर है, जिसे आत्म-जागरूकता के ज्ञान को प्रज्वलित करके प्रकाशित करने की आवश्यकता है। निरंतर सीखने और ज्ञान प्राप्त करने पर गुरु नानक का जोर रुहानी विकास और मानव उद्देश्य की उनकी समझ से कैसे संबंधित है?